ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-5* June-2017
Innovation The Research Concept

प्राचीन भारत में सती प्रथा

शैलेन्द्र कुमार मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर,
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
एम0 डी0 पी0 जी0 कालेज, प्रतापगढ़

सारांश

प्राचीन भारतीय धर्म में प्रकृति पुरुष को एक दूसरे का पूरक बताया गया है। शैव धर्म में भी शक्ति के अभाव में शिव को शव माना गया है। कुछ इसी प्रकार के भाव को लेकर भारतीय धार्मिक चेतना के विकास का प्रभाव महाकाव्यों व पौराणिक आख्यानों द्वारा भारतीय जनमानस पर पड़ा। फलतः स्त्री–पुरुष के वैवाहिक सम्बन्ध को सात जन्मों का माना गया। अतः पति की मृत्यु के अनुसार पत्नी को शरीर त्यागने की परम्परा प्रचलित थी। यद्यपि अनेक शास्त्रकारों ने इसकी निन्दा भी की है। कालान्तर में इस प्रथा को बन्द करना पड़ा।

मुख्य शब्द : सती प्रथा, वैवाहिक सम्बन्ध, भारतीय धार्मिक चेतना।

प्रस्तावना

विधवा के लिए दूसरा विकल्प था, अपने मृत पति के साथ चिता में जल मरना। 'सती' का शाब्दिक अर्थ 'अमर' अथवा 'सत्य पर स्थिर रहने वाली' है, जो पति–पत्नी का अटूट और अविच्छेय सम्बन्ध भी व्यक्त करता है। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ था, धर्म के प्रति एकनिष्ठ होकर अपने उज्ज्वल चरित्र की कीर्ति द्वारा संसार में अमर होने वाली स्त्री। सती शब्द की अभिव्यक्ति के लिए प्राचीन साहित्य में अन्वारोहण (मृत पति के साथ चिता पर चढ़ना), सहगमन (मृत पति का अनुगमन करना), सहमरण (मृत पति के साथ मरना) और अनुसरण (यदि पति की मृत्यु विदेश प्रवास काल में हो तो उसका समाचार जानने के बाद, उसके पीछे मरना) आदि अनेक शब्द प्रचलित है। इन शब्दों के व्यवहार के स्पष्ट होता है कि विवाहोपरान्त पति–पत्नी का सम्बन्ध जीवितावस्था में अत्यन्त प्रगाढ़ और पावन होता था तथा पति के मरने के बाद परलोक और जन्मांतर में भी तद्वत् अटूट बना रहता था। अतः 'सती' शब्द की व्यंजना उसके ऐतिहासिक विकास, प्रचलन और प्रसार से है, जिसमें मृत पति के प्रति विधवा स्त्री का अनुपम अनुराग, त्याग और बलिदान परिलक्षित होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र प्राचीन भारत में सती प्रथा की परम्परा का, विश्लेषण करता है।

भारत में सती प्रथा का कब से प्रारम्भ हुआ, यह विवादास्पद है। पूर्ववैदिक और उत्तर वैदिक साहित्य के कुछ उद्धरणों के आधार पर यह कहा यगा है कि सती प्रथा का प्रारम्भ आर्यों के प्रारम्भिक जीवन–काल से हुआ। किन्तु सती प्रथा के सम्बन्ध में जो उद्धरण मिलते है, ये अत्यधिक संदिग्ध है। ऋग्वेद[1] में आए हुए एक मन्त्र को लेकर मतभेद है कि उसमें 'अग्नि' शब्द का प्रयोग हुआ है या 'अग्रे' शब्द का। उक्त अंश का यह अर्थ है कि स्त्री अपने मृत पति के शव के साथ लेटती हैं तत्पश्चात् उसे संबोधित किया जाता है, 'नारी उठो, पुनः इस संसार में आओ।' इस अंश के आधार पर माना गया है कि सती–प्रथा का प्रारम्भ पूर्ववैदिक युग में ही हो गया था। सती प्रथा से सम्बन्धित इसी प्रकार का अर्थ व्यंजित करने वाले उत्तर वैदिककालीन साहित्य के कई उद्धरण मिलतेक है।[2] तैत्तिरीय संहिता, अथर्ववेद और तैत्तिरीय आरण्यक में कुछ ऐसे ही अर्थ अभिव्यक्त करने वाले श्लोक है। अथर्ववेद में उल्लिखित है कि अपने मृत पति के शव के साथ विधवा नारी चिता पर आरोहण करती है और उसके बाद उसे चिता से उतर आने के लिए निर्देशित किया जाता है। अतः कहा जाता है कि उस युग में सती–प्रथा का व्यवहार था जिसकी परम्परा उक्त उद्धरण में झलकती है। तैत्तिरीय आरण्यक के उद्धरण में मृत पति के साथ विधवा स्त्री दर्शित की गई है, जिसका आगामी जीवन सुखमय होने की इच्छा व्यक्त की गई है। किन्तु किसी गृहसूत्र में सती प्रथा का उल्लेख नहीं मिलता है; केवल आपस्तम्ब धर्मसूत्र में यह उल्लेख है कि मृत पति का भाई या उसका शिष्य या कोई दास विधवा स्त्री को शमशान से घर ले आता था। इससे यह व्यक्त

होता है कि मृत पति के साथ उसकी विधवा पत्नी किसी न किसी रूप में सम्बन्धित की गई। ऐसा लगता है कि पुरुष की सर्वाधिक प्रिय पत्नी ही रही है, इसलिए प्राचीन व्यवस्थाकारों ने मृत पति के साथ उसकी पत्नी को सहगमित करने के लिए निर्देशित किया।

भारत में सती प्रथा का पुनः प्रचलन चौथी सदी ई0पू0 के पश्चात् किसी समय व्यवहार में आया। इसका उल्लेख रामायण और महाभारत महाकाव्य में भी हुआ है। रामायण में ब्राह्मणी वेदवती के सती होने का उल्लेख है[3], जो स्वभावतः प्रक्षेप है, क्योंकि दशरथ के मरने पर उसकी कोई भी पत्नी सती नहीं हुई है थी। महाभारत में सती प्रथा के कतिपय स्पष्ट उदाहरण मिलते हैं। महाराज पाण्डु के मृत होने पर उनकी रानी माद्री ने अन्वारोहण किया था।[4] कृष्ण के पिता वासुदेव के मरने पर उनकी चार पत्नियों, देवकी, मद्रा, रोहिणी और मदिरा ने सहमरण किया था।[5] महाभारत के शांतिपर्व में एक कपोत कपोती की कथा दी गई है, जिसमें के मर जाने पर कपोती पतिव्रता के रूप में सती हो गई।[6] सती सम्बन्धी के दृष्टान्त उस युग के सती–प्रचलन का भान कराते है। ग्रीक इतिहासकारों ने भी सती प्रथा का संकेत दिया है। स्ट्रैबो ने तक्षशिला की स्त्रियों के लिए लिखा है कि वे मृत पति के साथ चिता में जल मारती थी।[7] पंजाब की कठ जाति में सती प्रथा का व्यवहार था।[8] अतः सती प्रथा के ऐतिहासिक उदाहरण चौथी सदी ई0पू0 से ही मिलते है, जिसका उल्लेख यूनानी लेखकों ने किया है। कालिदास ने इस प्रथा का संकेत 'पतितवर्त्मगा' पद द्वारा किया है।[9] सती–धर्म प्राणिमात्र और चेतनाहीनों के लिए भी स्वाभाविक था।[10] वात्सायनकृत कामसूत्र में उल्लिखित है कि नर्तकियाँ अपने प्रेमियों को सती होने का झूठा आश्वासन दिया करती थी।[11] बृहस्पति की दृष्टि में वैधव्य के ब्रह्मचर्य की स्थिति से सती होना अच्छा था।[12] व्यास और दक्ष सती धर्म को विधवा के जीवन का सर्वोत्तम विकल्प स्वीकार किया है[13] जो स्वर्ग से भी बढ़कर महत्वशाली था। वृहत्संहिता के अनुसार विधवा के लिए सती होना श्रेयस्कर था।[14] सती होने के सम्बन्ध में गुप्तकालीन अभिलेखीय प्रमाण भी मिलता है। हूणों के विरुद्ध युग में मृत (510 ई0) सेनापति गोपराज की पत्नी अग्निराशि में प्रविष्ट होकर सती हो गई थी।[15] पुराणों में भी सती प्रथा के अनेक प्रसंग विद्यमान है। श्रीकृष्ण की मृत्यु हो जाने पर रूकमणी आदि उनकी पत्नियों ने उसके मृत शरीर का आलिंगन करके अग्नि मे प्रवेश किया था।[16] अपने पति बलराम के मृत होने पर रेवती सती होने पर अह्लादपूर्वक उसके शरीर का आश्लेश का शीतल अग्नि में प्रविष्ट हुई थी।[17] हर्शचरित से विदित होता है कि प्रभाकरवर्धन की मृत्यु के पहले हो उसकी पत्नी यशोमती अग्नि–प्रवेश कर चुकी थी। परवर्ती व्यवस्थाकारों ने सती प्रथा की प्रशंसा की है। कृत्यकल्पतरु में ब्रह्मपुराण का उद्धरण दिया गया है जिसके अनुसार 'पति के मरने पर सत्–स्त्रियों की दूसरी गति नहीं। भर्तृ–वियोग से उत्पन्न दाह का दूसरा कोई शमन नहीं। यदि पति देशान्तर में मरे तो साध्वी स्त्री उसकी पादुकाएँ अपने हृदय से लगाकर तथा पवित्र होकर अग्नि में प्रवेश करें।[18] विज्ञानेश्वर ने मेधातिथि का विरोध करते हुए यह निर्देश दिया है कि यह सती प्रथा सभी वर्णों में प्रचलित होनी चाहिए।[19] लक्ष्मीधर ने अंगिरा को उद्धृत करते हुए लिखा है कि पति के मृत हो जाने पर जो स्त्री हुताशन (अग्नि) पर आरोहण करती है; वह अरुधन्ती (वसिष्ठ की पत्नी) के सदृश आचरण करने वाली स्वर्गलोक में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करती है। मनुष्य के शरीर के साढ़े तीन करोड़ रोएँ जितने वर्ष पर्यन्त यह पति का सहगमन करते हुए स्वर्ग में निवास करती है। जिस प्रकार साँप पकड़ने वाला साँप को बिल में से निकाल लेता है उसी प्रकार अधोगति से अपने पति को बचाकर उसके साथ स्त्री स्वर्ग की ओर प्रस्थान करती है। पति का अनुगमन करने वाली स्त्री माता, पिता तथा भर्ता, तीनों के कुलों को उज्ज्वल और पवित्र करती है। वह पति में अनुरक्ति रखने वाली, उत्तम, परम आकांक्षावाली स्त्री पति के साथ स्वर्ग में चतुर्दश इन्द्रों के समय तक बिहार करती है। पति कृतघ्न अथवा मित्रघ्न ही क्यों न हो, उसका अनुगमन करने वाली स्त्री उसे पवित्र करती है। पति के मरने पर जब तक पतिव्रता अपने शरीर का दाह नहीं कर लेती तब तक वह शरीर से किसी प्रकार भी मुक्त नहीं हो पाती। मरकर पति के स्वर्ग जाने पर वियोग के क्षत (घाव) से कातर स्त्रियों का अग्नि–प्रवेश के अतिरिक्त दूसरा मार्ग (धर्म) नहीं।[20] राजतरंगिणी से सती प्रथा के कई साक्ष्य मिलते है। उसके अनुसार शंकचर वर्मन के मर जाने पर उसकी सुरेन्द्रवती नामक प्रधान रानी के साथ तीन रानियों ने अन्वारोहण किया था।[21] कन्दर्प सिंह के मृत होने पर उसकी भार्या सती हुई थी।[22] कथासरित्सागर में भी पति के मरने पर सती होने की व्यवस्था का उल्लेख मिलता है।[23] उत्तर प्राचीन कालीन अभिलेखों में भी सती के अनेक विवरण मिलते है। नेपाली अभिलेख से ज्ञात होता है कि राजा धर्मदेव के मरने पर उसकी पत्नी राज्यवती ने अन्वारोहण किया था।[24] जोधपुर से प्राप्त एक अभिलेख में विवृत है कि गुहिलवंशीय दो रानियाँ चिता में जलकर सती हो गई।[25] पटियाला (जोधपुर) अभिलेख (810 ई0) राजपूत सामंत राणुक का उल्लेख करता है, जिसके साथ उसकी पत्नी सम्पलदेवी ने सहगमन किया था।[26] इन अभिलेखीय प्रमाणों से यह स्पष्ट है कि समाज में सती प्रथा का चलन था। यह सही है कि सती प्रथा विशेषकर राजपरिवारों और अभिजात वर्ग में ही अधिक प्रचलित थी, किन्तु बाद में इसका प्रचलन जन–साधारण में भी यदा–कदा होने लगा तथा धर्म भीरु जनता भी इस प्रथा की अनुगामिनी बन गई।

एक ओर जहाँ कुछ शास्त्रकारों में सती–प्रथा का समर्थन किया है, वहीं कुछ ने इसका घोर विरोध। मध्यकालीन टीकाकार मेधातिथि ने इस प्रथा का प्रबल विरोध करते हुए अपने मत के समर्थन में वेदवाकय उद्धृत किया है, जिसके अनुसार ''यद्यपि अंगिरा ने सती प्रथा के अनुसरण की अनुमति दी है, तथापि सही अर्थों में यह आत्महत्या है, जो स्त्रियों के लिए पूर्णतः निशद्ध है। वेद में 'ष्येनेमाभिरन यजेत्' पाया जाता है, फिर भी यह धर्म नही समझा जाता (यह अभिचार या जादू है), अपितु अधर्म। यद्यपि सती का उल्लेख हुआ है, तथापि वस्तुतः यह अधर्म है। जो स्त्री शीघ्रता से अपने तथा अपने पति के लिए स्वर्ग पाने को उत्सुक है, वह अंगिरा के वचन का पालन

तो करती है, परन्तु उसका आचरण अशास्त्रीय है। अपने पूर्ण विहित जीवन में कर्तव्य कर्म का पालन करने के पूर्व इस संसार का (बलात्) त्याग नहीं करना चाहिए।[27] देवगण भट्ट ने भी इस प्रथा की कटु आलोचना करते हुए अपना विचार व्यक्त किया है कि सती होना विधवा के ब्रह्मचारिणी रहने की अपेक्षा अधिक जघन्य है।[28] इन शास्त्रकारों और भाष्यकारों के पूर्व महाकवि बाण ने भी सती प्रथा का कड़ा विरोध किया है और इस कार्य को जघन्य बताते हुए भर्त्यना की है। उसका मत है कि स्त्री सती होकर आत्महत्या करती है। इस पाप के कारण वह नरक में गमन करती है।[29] मृच्छकटिक में भी सती प्रथा की भर्त्सना और निन्दा की गई है।[30] महानिर्वाणतन्त्र के अनुसार मोह के वशीभूत होकर चितारोहण करने वाली नारी नरकगामिनी होती है।[31]

कुछ व्यवस्थाकारों द्वारा सती प्रथा के विरोध के बावजूद समाज में इसका प्रभाव बराबर बना रहा। बल्कि, यह कहना अत्युक्ति न होगा कि मध्यकाल तक आते–आते हिन्दू समाज में अभिजात वर्ग में इसका प्रभाव स्थयी होता गया। पूर्वमध्ययुगीन अरब लेखकों ने सती प्रथा के सम्बन्ध में वितरण दिया है तथा उनके अनुसार राजपूत ओर योद्धा वर्ग ने सती प्रथा का विशेष अनुपालन किया।[32]

धर्मशास्त्रकारों ने भी इस प्रथा का अनुसरण करने के लिए क्षत्रिय वर्ग को ही अधिक उपयुक्त बताया है।[33] पदम् पुराण में ब्राह्मण स्त्री के लिए सती प्रथा का अनुसरण करना ब्रह्महत्या के समान कहा गया है तथा पैठिनसि, अंगिरा, व्याघ्रपाद आदि शास्त्रकारों के कथनों के आलोक में अपरार्क ने भी यह व्यवस्था दी है कि ब्राह्मणी के सती प्रथा का अनुपालन करना युक्तियुक्त नहीं।[34] शुद्धितत्व[35] में सती पद्धति के विशय में लिखा है, ''विधवा स्नान करके दो ष्वेत वस्त्र पहनती है, अपने हाथों में कुश पकड़ती है, पूरब अथवा उत्तर की ओर मुख करके खड़ी होती है और आचमन करती है। जब ब्राह्मण 'क्षोभ तत्सत्' उच्चारण करता है, तब वह भगवान् नारायण का स्मरण करती हैं वह मास, तिथि और पक्ष का निर्देश करती हुई संकल्प करती है। अपने सहमरण अथवा अनुसरण के साक्षी होने के लिए दिग्पालों का आवाहन करती है। तीन बार चिता की प्रदक्षिणा करती है। उस समय ब्राह्मण 'इमा नारी' आदि वैदिक मंत्रो का उच्चारण करता है और फिर पौराणिक वचन, 'पति में अनुरक्त ये भद्र और पवित्र स्त्रियाँ मृत पति के शरीर के साथ अग्नि में प्रवेश करें।'

निष्कर्ष

ऊपर के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सती प्रथा हिन्दू समाज की अत्यन्त क्रूर, जघन्य कृतघ्न और निन्दनीय प्रथा थी। सच्चरित्रता और सदाचरण के अनुपालन के लिए धर्म के नाम पर जीते जी स्त्री का जल मरना अथवा जबरन सती होने के लिए उसे बाध्य करना अमानुशिक और घृणित कार्य था। दायभाग का यह कथन है कि बहुथा सम्पत्ति में से स्त्री को हिस्सा न देन के उद्देश्य से लोभवश सती होने के लिए उसे विवश कर दिया जाता था[36], कुछ अर्थो में सही प्रतीत होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *ऋग्वेद, 10.18.7*
   वही, 10.18.8
2. *तैत्तिरीय संहिता, विल्सन्स वर्क्स, 2, पृ0 295–96*
   अथर्ववेद, 19.21
   तैत्तिरीय आरण्यक, 6.1
3. *रामायण, 7.17.14, 33*
4. *महाभारत, आदि0, 95–96*
5. *वही, मौसल0 17.7.8–24*
6. *वही, 248, 8–9*
7. *मैकिंडल, पृ0 69–70*
8. *वही।*
9. *कुमारसंभव, 4.33, 35, 36, 45*
10. *वही।*
11. *कामसूत्र, 6.2.53*
12. *बृहस्पति0, 483–84*
13. *व्यास0, 2–53*
14. *बृहत्संहिता, 84.16*
15. *फ्लीट, 3, 83*
16. *विष्णु पु0, 5.38.2*
17. *वही, 5.38.3*
18. *ब्रह्मपुराण का उद्धरण, कृत्यकल्पतरु, पृ0 634*
19. *मिताक्षरा, याज्ञवलक्य, 1.86*
20. *अंगिरा का उद्धरण, कृत्यकल्पतरु, व्यवहारकांड, पृ0 632–34*
21. *राजतरंगिणी, 5.226*
22. *वही, 7.103*
23. *कथासरित्सागर, 10.58*
24. *इं0 ऐं0, 9, पृ0 164, 344, 350*
25. *इपि0 इं0, 20, पृ0 58*
26. *प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑफ दि ए0एस0आई0, वेस्टर्न सर्किल, 1906, पृ0 35*
27. *मेधातिथि, मनु0, 8.156–7*
28. *स्मृतिचन्द्रिका, व्यवहारकांड, पृ0 598*
29. *कादम्बरी, पूर्वार्द्ध, पृ0 308*
30. *मृच्छकटिक, अंक 10*
31. *महानिर्वाणतन्त्र, 10.79*
32. *ग्यारहवीं सदी का भारत, पृ0 164–65*
33. *वृहद्देवता, 5.15*
34. *पद्मपुराण, 49.72–3*
35. *याज्ञवलक्य, 1.87*
36. *दायभाग, पृ0 46, 56*